जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

यदि पात्रता हो तो कुछ भी अलभ्य नहीं, पुरुषार्थियों की पिपासा तृप्त होती ही है; पर सब कुछ अन्तर की लगन पर निर्भर करता है।

ह्न आप कुछ भी कहो, पृष्ठ : 22

वर्ष : 27, अंक : 11 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (प्रथम)2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एकप्रति : 2/-

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित -

सत्ताईसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 8 अगस्त से 17 अगस्त, 2004 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित 27 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ; जिसके उद्घाटन के समाचार विगत अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

शिविर के अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रतिदिन प्रात: प्रवचनसार ग्रन्थ की 23 से 26 गाथाओं तक तथा रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक के नवमें अधिकार में पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। आपके प्रवचनों के पूर्व प्रारंभिक पाँच दिन दोनों समय डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के समयसार की 19वीं गाथा पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

इसके अतिरिक्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व दोनों समयों में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन सिंगोड़ी, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित मनीषकुमारजी रहली के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा निमित्तोपादान, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा परमभावप्रकाशक नयचक्र तथा पण्डित मनीषकुमारजी रहली द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षायें ली गई।

व्याख्यानमाला में प्रतिदिन क्रमश: डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, डॉ. दीपककुमारजी जैन जयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, डॉ. भागचन्दजी जैन, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर का विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर रविवार, दिनांक 15 अगस्त 2004 को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई के सलाहकार बोर्ड का अधिवेशन रखा गया; जिसकी अध्यक्षता ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा ने की। सभा का उद्घाटन श्री अरविन्दभाई दोशी गोंडल ने किया।

मुख्यअतिथि के रूप में श्री विजयकुमारजी बड़जात्या इन्दौर तथा विशिष्टअतिथि के रूप में श्री कपूरचन्दजी डैडी भोपाल, श्री मनोहरलालजी काला इन्दौर, श्री ज्ञानमलजी पाटोदी, श्री अजीतप्रसादजी दिल्ली, श्री महीपालजी शाह बांसवाड़ा, श्री गुलाबचन्दजी जैन सागर, श्री पदमकुमारजी पहाडिया इन्दौर, श्री जगदीशप्रसादजी सर्राफ, श्री मगनलालजी मामा आरोन, श्री शम्भूकुमारजी जैन आदर्शनगर जयपुर मंचासीन थे। साथ ही ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अमृतभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित जवाहरलालजी विदिशा, श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई, श्री आलोकजी जैन कानपुर आदि उपस्थित थे। सभा का संचालन श्री बसन्तभाई दोशी, मुम्बई ने किया।

दिनांक 17 अगस्त, 2004 को समापन समारोह के अवसर पर ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री एवं श्री पीयूषजी शास्त्री ने शिविर की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

शिविर में पूरे देश से पधारे 1272 आत्मार्थियों ने लाभ लिया। 54 हजार 8 सौ 17 रुपयों का नकद एवं 70 हजार 6 सौ 82 रुपयों का उधार इसप्रकार कुल 1 लाख 25 हजार 4 सौ 99 रुपये का सत्साहित्य एवं 15 हजार 4 सौ 29 रुपयों के 1649 घण्टों के सी.डी. एवं ऑडियो कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान के अनेक सदस्य बनें।

अवश्य पधारें

दिनांक 17 अक्टूबर से 26 अक्टूबर, 2004 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के अवसर पर अवश्य पधारें।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

14 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–२०

णाणावरणादीया भावा जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा।
तेसिमभावं किच्चा अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो ।।२०।।

(हरिगीत)

जीव से अनुबद्ध ज्ञानावरण आदिक भाव जो।
उनका अशेष अभाव करके जीव होते सिद्ध हैं।।२०।।

पूर्वोक्त १९वीं गाथा में कहा है कि ह्न यद्यपि द्रव्यापेक्षा सत् का विनाश और असत् का उत्पाद नहीं होता तथापि पर्याय की अपेक्षा देव जन्मता है, मनुष्य मरता है। निमित्तरूप से देव–मनुष्य गति नामकर्म भी उतने ही काल का होता है।

अब प्रस्तुत २० वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि ज्ञानावरणादि भाव जीव के साथ भलीभांति अनुबद्ध हैं, उनका अभाव करके जीव सिद्ध होता है।

आचार्य अमृतचन्द्र ने इसकी टीका करते हुए जो स्पष्टीकरण किया है, उसका सार यह है कि ''सिद्धपर्याय सर्वथा असत् का उत्पाद नहीं है। अभी तक संसार अवस्था में मनुष्य–देव आदि की जो भी पर्यायें होती थीं, उन सबमें ज्ञानावरणादि कर्मों का उदय निमित्तरूप से रहता था, अब कर्मों के अभावरूप जो सिद्ध पर्याय हुई, वह सर्वथा असत् का उत्पाद नहीं हुआ। संसारी पर्यायें कर्मों के साथ–साथ होती थीं, सिद्धपर्याय कर्मों के अभाव से हुई। जीव तो जो संसार दशा में था, वही है। अत: सिद्ध को सर्वथा असत् का उत्पाद कैसे कह सकते हैं ? नहीं कह सकते। इसप्रकार इस गाथा में यह बताया गया है कि ह्न कर्मों के अभाव से उत्पन्न हुई सिद्धपर्याय का सर्वथा प्रकार से असत् का उत्पाद नहीं है; क्योंकि आत्मवस्तु तो अनादि से है और द्रव्यदृष्टि से शुद्ध ही है; परन्तु पर्याय में अशुद्धता है। आत्मा अनादि से ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के निमित्त से स्वयं राग–द्वेष–मोह के वश हुआ है, इसलिए व्यवहार से जड़कर्मों से बंधा कहा जाता है।

आचार्यदेव बांस के उदाहरण से समझाते हैं। जैसे कि ह्न एक लम्बा बांस है, जो पूर्वार्द्ध भाग में विचित्र चित्रों से चित्रित है, उससे ऊपर का आधा भाग शुद्ध–साफ–सुथरा है, वह रंग–बिरंगे चित्रों से चित्रित नहीं है; परन्तु वह ढंका है, इसकारण अज्ञानी भ्रान्तिवश नीचे के रंग–बिरंगे बांस को देखकर ऊपर के साफ–सुथरे रंग रहित बांस को भी चित्रित (अशुद्ध) मान लेता है; उसीप्रकार यह जीव व्यवहार से संसार अवस्था में मिथ्यात्व रागादि विभाव परिणामों के कारण अशुद्ध, शुद्ध द्रव्यार्थिकनय से देखते तो अंतरंग में स्वभाव से तो आत्मा केवलज्ञानादि स्वरूप से शुद्ध ही है; परन्तु अज्ञानी अभ्यन्तर में–त्रैकालिक ध्रुव स्वभावी केवलज्ञान स्वरूप में भी भ्रान्तिवश अशुद्धता मान लेता है।

आचार्य जयसेन ने अपनी तात्पर्यवृत्ति टीका में भी बांस के उदाहरण से ऐसा समझाया है। वे कहते हैं कि जिसप्रकार जीव नीचे के उघड़े बांस को रंग–बिरंगा चित्रित देखकर ऊपर के ढंके हुए बांस को भी रंग–बिरंगा मान लेता है, इसप्रकार वह सम्पूर्ण बांस को रंगा हुआ मान लेता है। वैसे ही अज्ञानी आत्मा के वर्तमान मलिनरूप को देखकर आभ्यन्तर में विद्यमान सिद्ध समान शुद्धस्वरूप को भी मलिन मान लेता है तथा जिसप्रकार चित्रित बांस को धो देने पर बांस साफ हो जाता है, उसीप्रकार ज्ञानी द्वारा आगम, अनुमान और स्वसंवेदन प्रत्यक्ष ज्ञान से आत्मा का सिद्ध समान शुद्ध स्वरूप जान लिया जाता है। सम्पूर्ण आत्मा को द्रव्यार्थिकनय से शुद्ध मान लेता है।

तात्पर्य यह है कि अभूतपूर्व सिद्धस्वरूप जीवास्तिकाय नामक निर्विकल्प स्वसंवेदन से जाना हुआ त्रिकाल शुद्धात्मद्रव्य ही उपादेय है ह्न ऐसा ज्ञानी मान लेता है।

कवि हीरानन्दजी कहते हैं कि ह्न

(दोहा)

ग्यानावरनादिक करम जीवभाव अनुबिद्ध।
तिनको नास अभूत करि, होइ अपूरव सिद्ध।।१२४।।

इसी बात बांस के उदाहरण से सवैया छन्द में समझाते हैं ह्न

(सवैया इकतीसा)

जैसें बेणुदंड एक दीरघ प्रचंड लसै,
पूरब अरथ भाग चित्र चित्र कीनै है।
ताहीभाग दृष्टि देत सगरा असुद्ध दंड,
सुद्धता न भासै कहुँ सुद्ध भावलीनै है।।
जैसैं ताही दंड विषै ऊरध है खंड सुद्ध,
सारा खंड सुद्ध तातैं सुद्धभाव दीनै है।
तैसें जीवदर्व सुद्धासुद्ध जानै भव्य,
मानै सुद्ध सारा द्रव्य मिथ्याभाव हीनै है।।१२५।।

उक्त सवैया का अर्थ यह है कि ह्न जिसप्रकार लम्बे बांस का नीचे का आधा भाग विचित्र रंगों से चित्रित है, मलिन है और ऊपर का आधा भाग साफ (शुद्ध) है; परन्तु ढंका है; इसकारण अज्ञानी नीचे के भाग को देखकर ऊपर के ढंके हुए शुद्ध मार्ग को भी अशुद्ध (चित्रित) मान लेता है तथा ज्ञानी ऊपर के शुद्धस्वरूप को देखकर अनुमान लगा लेता है कि नीचे का भाग भी ऊपर के भाग की तरह ही स्वभावत: शुद्ध है, पूरा बांस साफ–सुथरा है। यह रंग–बिरंगे चित्र तो ऊपर–ऊपर हैं, जिन्हें हटाया जा सकता है। यह रंग–बिरंगापन बांस का स्वभाव नहीं है। उसीप्रकार जीवद्रव्य जो संसारपर्याय में शुद्धाशुद्ध रूप है, वह स्वभावत: ही शुद्ध ही है, ऐसी श्रद्धा से मिथ्याभाव का अभाव होकर सिद्धदशा प्रगट होती है।

इस गाथा का भाव पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैं ह्न

''इस गाथा में कहते हैं कि ह्न संसारपर्याय के अभावस्वरूप सिद्धपर्याय का सर्वथा असत का उत्पाद नहीं है, यह बताते हैं।

आत्मा वस्तु तो अनादि से द्रव्यदृष्टि से शुद्ध ही है, परन्तु पर्याय में अशुद्धता है। आत्मा अनादि से ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के निमित्त से स्वयं राग–द्वेष–मोह के वश हुआ है, इसलिए व्यवहार से जड़कर्मों से बँधा हुआ

कहा जाता है और अपनी पर्याय से (भावकर्मों से) बँधा हुआ है ह्न यह अशुद्ध निश्चयनय का कथन है। ध्यान रहे, जब जीव स्वयं अज्ञानभाव करता है, तब जो कर्मबंध होता, उस दशा में जीव जड़कर्मों से बँधा है ह्न ऐसा कहा जाता है।

इन आठों कर्मों का मूल सत्ता से विनाश हो जाए तो अनादिकाल से किसी भी काल में नहीं प्राप्त (अभूतपूर्व) ऐसे सिद्धपद की प्राप्ति होती है। जड़कर्म का अभाव करना आत्मा के अधिकार की बात नहीं है; परन्तु यदि आत्मा अपने चैतन्य स्वभाव की दृष्टि करे तो राग-द्वेष मोह का नाश होता है। राग-द्वेष-मोह का नाश कर्मों के अभाव होने में निमित्त होने से जीवन ने कर्मों का नाश किया ह्न ऐसा कहा जाता है।

राग-द्वेष निमित्त है और कर्म नैमित्तिक है। आत्मा राग करता है तो जड़कर्म निमित्त कहलाते हैं; इसलिए विकारी पर्याय नैमित्तिक और जड़कर्म निमित्त है। कोई यह मानता हो कि निमित्त है ही नहीं तो वह बात मिथ्या है। तथा निमित्त है इसलिए राग-द्वेष होते हैं ह्न ऐसा भी नहीं है और राग-द्वेष होते हैं इसलिए नये कर्म को बँधना पड़ता है ह्न ऐसा भी नहीं है। वास्तविकता यह है कि कर्म की पर्याय कर्म के कारण और राग की पर्याय राग के कारण होती है।

आत्मा त्रिकाली शुद्ध चिदानंद है। निमित्त पर है, और मुझमें जो राग-द्वेष होते हैं, मैं उतना नहीं हूँ। मैं तो अनादि से शुद्ध हूँ ह्न ऐसी दृष्टि होकर उसी में लीनता होने से मिथ्यात्व-रागादि का अभाव होता है; और रागादि का अभाव होने से कर्मों का भी नाश हो जाता है ह्न नया कर्म उसके कारण नहीं बँधता। राग-द्वेष का अभाव होने पर जो अनादि से नहीं था ऐसा सिद्धपद प्राप्त होता है। पर्यायदृष्टि से सिद्धपद नया होता है।

द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक के भेद से नय दो प्रकार के हैं। इन दोनों नयों से वस्तु का स्वरूप बतलाया है।

इस गाथा में चार बोल कहे गये हैं ह्न

१. द्रव्यदृष्टि से आत्मा में सिद्धस्वरूप-अनादि-अनंत है।

२. पर्यायदृष्टि से आत्मा में कभी नहीं हुई ऐसी नयी सिद्धपर्याय होती है।

३. द्रव्यदृष्टि से आत्मा में संसार है ही नहीं।

४. पर्यायदृष्टि से आत्मा में संसार अनादि का है, नया नहीं।

द्रव्यार्थिकनय की विवक्षा की जाए तो जीवद्रव्य सदा अविनाशी, टंकोत्कीर्ण, संसारपर्याय होने पर भी उत्पादनाश से रहित सिद्धसमान है।''

इसप्रकार उपर्युक्त आचार्य कुन्दकुन्ददेव से श्री कानजीस्वामी तक ह्न सभी के स्पष्टीकरण से यह सिद्ध हुआ कि द्रव्यार्थिकनय से या शुद्ध निश्चयनय की दृष्टि से वह आत्मवस्तु के त्रैकालिक स्वरूप को देखते हैं तो वह पूर्णशुद्ध ही है और पर्यायार्थिकनय की दृष्टि से या व्यवहारनय से पर्याय को देखते हैं तो वही आत्मा विकारी है, अशुद्ध है।

ज्ञानी आत्मा की अशुद्धदशा में उसके त्रैकालिक केवलज्ञानस्वभावी शुद्ध आत्मा को देख लेता है।

गाथा-२१

एवं भावमभावं भावाभावं अभावभावं च।
गुणपज्जएहिं सहिदो संसरमाणो कुणदि जीवो ।।२१।।

(हरिगीत)

भाव और अभाव भावाभाव अभावभाव में।
यह जीव गुणपर्यय सहित संसरण करता इसतरह ।।२१।।

आचार्य कुन्दकुन्द इस गाथा में कहते हैं कि ''यह जीव गुण पर्यायों सहित संस्करण करता हुआ भाव को, अभाव को, भावाभाव को और अभाव-भाव को करता है।

इस गाथा की टीका करते हुए अमृतचन्द्र कहते हैं कि ह्न यह जीव को उत्पाद, व्यय, सत्-विनाश और असत्-उत्पाद के कर्तृत्व होने की सिद्धि रूप उपसंहार है।

वस्तुत: आगम में द्रव्य को सर्वदा अविनष्ट और अनुत्पन्न कहा है, इसलिए जीवद्रव्य को द्रव्यरूप से नित्यपना कहा गया है। (१) देवादि पर्याय रूप से उत्पन्न होता है, इसकारण उस जीवद्रव्य को ही भाव का अर्थात् उत्पाद का कर्तृत्व कहा गया है, (२) मनुष्यादि पर्यायरूप से मृत्यु (नाश) को प्राप्त होता है, अत: उसी जीव को अभाव का अर्थात् व्यय का कर्तृत्व कहा जाता है। (३) सत् अर्थात् विद्यमान देवादि पर्याय का नाश करता है, इसकारण उसी को भावाभाव का सत् के विनाश का कर्तृत्व कहा गया है और (४) असत् अर्थात् अविद्यमान मनुष्यादि पर्याय का उत्पाद करता है, इसलिए उसी को अभाव भाव का अर्थात् असत् के उत्पाद का कर्तृत्व कहा गया है।

यह सब निर्दोष, निर्बाध, अविरुद्ध है; क्योंकि द्रव्य और पर्यायों में से एक की गौणता से और अन्य की मुख्यता से कथन किया जाता है।

आचार्य जयसेन ने इस गाथा की टीका में जो कहा, उसका अभिप्राय यह है कि द्रव्यार्थिकनय से नित्यता होने पर भी संसारी जीव के पर्यायार्थिक नय से देव, मनुष्य आदि के उत्पाद-व्यय के कर्तृत्व संबंधी व्याख्यान की मुख्यता से यह गाथा कही है।

इसी गाथा के स्पष्टीकरण में कवि हीरानन्दजी ने पद्य काव्य में इसप्रकार लिखा है ह्न

(सवैया इकतीसा)

दरवरूप देखैतैं उपजै न बिनसै है,
जीव अविनासी नित्य ग्रंथनिमैं बनै है।
देवपरजाय पावै भाव करता कहावै,
नरभौ अभावतैं अभावरूप सनै है।।
देव सत्यरूप नासै भावाभाव करता है,
आनभाव जानैतैं अभाव भाव चनै है।
सब ठीक कहात स्याद्वादकै बखान विषैं,
जथाथान नीकै लसै श्रीजिनेस भनै है।।१३३।।

द्रव्यरूप से देखने पर वस्तु न उत्पन्न होती है और न विनष्ट होती है। जीव अविनाशी है, नित्य है। देव पर्याय के प्राप्त होने की अपेक्षा 'भाव' का कर्तृत्व कहा जाता है, नरभव के अभाव से 'अभाव' रूप कर्तृत्व कहा जाता है। सत् (विद्यमान) देवपर्याय का नाश करता है, इसलिए उसी को भावाभाव का (सत् के विनाश का) कर्तृत्व कहा गया है और असत् मनुष्य पर्याय का उत्पाद करता है, इसलिए उसी को अभाव भाव का कर्तृत्व कहा गया है। **(क्रमश:)**

पयूर्षण पर्व के अवसर पर कौन - कहाँ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर विद्वान भेजने की व्यवस्था की गई है। यद्यपि पर्यूषण पर्व 18 सितम्बर से प्रारम्भ होगें; अभी पर्व प्रारंभ होने में काफी समय शेष है; फिर भी दिनांक 21 अगस्त 2004 तक हमारे पास 507 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं तथा अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 20 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार अभी सिर्फ 384 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 207 स्थानों पर तो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान ही जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ।

विशिष्ट विद्वान में ह्न 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', कोटा **2.कोल्हापुर :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर **3.जयपुर (टोडरमल स्मारक एवं आदर्शनगर) :** पं. रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर **4.मन्दसौर (नई आबादी):** पं.पूनमचंदजी छाबडा, इन्दौर **5.कोल्हापुर :** ब्र.यशपालजी जैन, जयपुर **6.इन्दौर (साधनानगर) :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन, सिवनी **7.देवलाली :** पं. अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली **8.कोलकाता (नया बाजार) :** पं. विमलप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन **9.खनियांधाना :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री, खनियाँधाना **10.मुम्बई (बोरीवली) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियाँधाना **11.खतौली :** ब्र.संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा **12. दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम', देवलाली **13. अजमेर (वीतराग-विज्ञान) :** पं. कपूरचंदजी 'कौशल', भोपाल **14.जयपुर (टोडरमल स्मारक एवं आदर्शनगर) :** पं. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर **15.राजकोट :** पं. प्रदीपकुमारजी झांझरी, उज्जैन **16. मुम्बई (मलाड़) :** पं. राजेंद्रकुमारजी, जबलपुर **17. छिन्दवाड़ा :** पं. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर **18.अलीगढ :** पं. अशोककुमारजी लुहाडिया,अलीगढ़ ।

विदेश में ह्न 1.अमेरिका : पण्डित दिनेशभाई शहा, मुम्बई **2.अमेरिका** : विदुषी उज्ज्वलाजी शहा, मुम्बई **3.अमेरिका** : पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री, मुम्बई ।

मध्यप्रदेश प्रान्त ह्न 1.जावरा : पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर **2.खुरई :** विदुषी कल्पनाजी जैन सागर, **3.भिण्ड (देवनगर) :** पं. सुरेशचन्दजी सिंघई भोपाल, **4.उज्जैन :** पं. श्रीयांसजी जैन जयपुर, **5.सिवनी :** पं. निर्मलकुमारजी जैन सागर, **6. गुना :** पं. सुबोधकुमारजी सिंघई सिवनी, **7.अंबाह (बडा मंदिर) :** पं. कोमलचंदजी जैन टडा, **8.बेगमगंज :** पं.नंदकिशोरजी गोयल विदिशा, **9.लुहारदा :** पं.बाबूलालजी बांझल गुना, **10.टीकमगढ :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, **11.छिन्दवाडा :** पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री, **12.भोपाल (कोहेफिजा) :** पं. सुरेशचंदजी जैन टीकमगढ, **13.भोपाल (चौक):** पं. मनीषकुमारजी शास्त्री रहली, **14.करेली :** विदुषी विमलाबेन जयपुर **15.बाकल :** पं.रूपचंदजी जैन बंडा, **16.विदिशा (किला अंदर) :** पं. देवेन्द्रकुमारजी सिंगोडी, **17.अकाझिरी :** पं. नितुलजी शास्त्री भिण्ड, **18.सिवनी :** पं. शिखरचंदजी जैन सिवनी, **19.दलपतपुर :** पं. निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, **20.मंदसौर (गौतमनगर) :** पं. कांतिकुमारजी पाटनी इंदौर, **21.बीना (तारणतरण) :** पं. समकितजी शास्त्री सिलवानी, **22.भानगढ :** पं. रमेशजी जैन भोपाल, **23.मंडलेश्वर :** पं. स्वप्निलजी शास्त्री, नागपुर **24.रतलाम :** पं. अशोकजी सिरसागंज, **25.इंदौर (मल्हारगंज) :** पं. देवेंद्रकुमारजी जैन कुंभोज बाहुबली, **26.पथरिया :** पं. भागचंदजी जैन पथरिया, **27.गंजबासौदा :** पं. संजीवकुमारजी शास्त्री इंदौर, **28.ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पं. जगदीशसिंहजी पवार उज्जैन, **29.जबलपुर :** पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर, **30.सिलवानी :** पं.ऋषभकुमारजी शास्त्री, अहमदाबाद **31.ग्वालियर (लश्कर) :** पं. कमलकुमारजी मलैया जबेरा, **32.बीड:** पं. अरूणकुमारजी लालोनी अशोकनगर, **33.भिण्ड (परमागम) :** पं. दिलीपजी बाकलीवाल इंदौर **34.खनियांधाना :** पं. तेजमलजी गंगवाल इन्दौर **35.अशोकनगर :** पं.चन्दुभाई मेहता फतेपुर, **36.शाहगढ़ :** पं. संजयकुमारजी सेठी जयपुर, **37.कुचडौद :** पं. नन्हेलालजी जैन मोकलपुर, **38. गौरझामर :** पं मुरारीलालजी नरवर **39.पथरिया (पार्श्वनाथ मंदिर) :** पं. कुंदनमलजी पथरिया, **40.मौ :** पं. पद्मचदजी अजमेरा रतलाम, **41.सागर (मकरोनिया) :** पं. शिखरचंदजी विदिशा, **42.आरोन :** पं.श्रेणिकजी जबलपुर, **43.रांझी (जबलपुर) :** पं. निलयजी शास्त्री टीकमगढ, **44.बडनगर :** पं. मनीषकुमारजी कहान खडैरी, **45.रहली :** पं. आदित्यजी शास्त्री खुरई, **46.ग्वालियर (फालका बाजार) :** पं. महेशचंदजी जैन ग्वालियर, **47.सोनागिर :** पं. मांगीलालजी कोलारस, **48.केसली :** पं. कमलचंदजी पिडावा, **49.राघौगढ :** पं. अमितकुमारजी शास्त्री भोपाल,**50.ग्वालियर(मुरार) :** पं. शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **51.लुकवासा :** पं. शशांक जैन अभाना, **52.द्रोणगिरि :** पं. सरदारमलजी बेरसिया, **53.महिदपुर :** पं. अनुराज जैन फिरोजाबाद, **54.इंदौर (शक्करबाजार) :** पं. सतीशचंदजी कासलीवाल महिदपुर, **55.अमरवाडा :** पं. राजेंद्रकुमारजी अमरपाटन, **56.बीना :** पं. मोतीलालजी जैन बीना, **57.उमरिया :** पं. नितिनजी अहमदाबाद, **58.बनखेडी :** पं. विकासजी जैन खनियांधाना, **59.बाबई :** पं. विमोशजी जैन खडैरी, **60.शुजालपुरसिटी :** पं. सुदीपकुमारजी तलाटी घाटोल, **61.भिण्ड :** पं. उदयमणिजी शास्त्री **62.इंदौर (गांधीनगर) :** पं. विपुलकुमारजी मोदी दलपतपुर, **63.सनावद :** पं. संभवजी जैन नैनधरा, **64.करैरा :** पं. नेमचंदजी शास्त्री, **65.जावरा :** पं.हीरालालजी गंगवाल **66.दुर्ग :** पं. सतीशचंदजी पिपरई, **67.जगदलपुर :** पं. सौरभकुमारजी शास्त्री फिरोजाबाद, **68.शहडोल :** पं. अमितकुमारजी जैन जबेरा, **69.आरोन :** पं. प्रदीपकुमारजी शास्त्री दमोह, **70.पेंढ्रा रोड :** पं. नितिनकुमारजी शास्त्री इंदौर, **71.अमायन :** पं. चेतन जैन खडैरी, **72.इन्दौर :** पं. सौरभजी जैन चन्देरी **73.बंडा बेलई :** पं. दीपेश जैन गुढा, **74.बडवाह :** पं. स्वतंत्रजी जैन खरगापुर, **75.शाहपुर :** पं. आशीषजी जैन कोटा, **76.कालापीपल :** पं.महेन्द्रजी सेठी **77.सुसनेर :** पं. निखिलजी जैन बंडा, **78.गढाकोटा :** पं. अनन्तवीरजी जैन फिरोजाबाद, **79.नरवर :** पं. प्रीतेशजी जैन बाँसवाडा, **80. टीकमगढ़ :** पं. अरुणकुमारजी जैन, **81. अशोकनगर :** पं. अमोलकचन्दजी जैन, **82. उज्जैन :** पं. बेलजीभाई शाह, **83.कर्रापुर :** पं. धनप्रसादजी जैन, **84.मौ :** ब्र. हेमराजजी जैन, **85.बण्डा :** पं. कपूरचन्दजी भाईजी, **86.खनियांधाना :** पं. ताराचन्दजी जैन **87.बदरवास :** पं. अभयकुमारजी जैन, **88.घोडाडूंगरी :** पं. सुरेशचन्दजी जैन, **89. भोपाल :** पं. अनुरागकुमारजी बडकुल, **90.भोपाल :** पं.राजमलजी पवैया **91.राघौगढ :** पं. अशोकजी मांगुलकर, **92.ग्वालियर :** पं. अजितजी जैन, **93.ग्वालियर :** पं. महेन्द्रजी जैन **94.भोपाल :** पं. धर्मेशजी शास्त्री रईयाना, **95.निसई (तारण-तरण) :** पं.कपूरचन्दजी समैय्या, **96.कटनी :** पं.संतोषजी जैन शास्त्री, **97.ग्यारसपुर :** पं. राजेशजी शास्त्री, **98.लोहारदा :** पं. छगनलालजी जैन, **99.सिवनी :** पं. के.सी. भारिल्ल, **100.ग्वालियर :** पं. धनेन्द्रजी सिंघल **101.ग्वालियर :** पं. सुनीलजी जैन, **102.खैरागढ़ :** पं. दुलीचन्दजी जैन, **103.रीवा :** पं. विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद ।

महाराष्ट्र प्रान्त ह्न 1.औरंगाबाद : ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा **2.मुम्बई (भायन्दर वेस्ट) :** मीठाभाईजी दोशी हिम्मतनगर, **3.मुम्बई :** पं.परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, **4.मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पं. सुशीलकुमारजी जैन इन्दौर **5.मुम्बई (घाटकोपर) :** पं. रमेशचन्दजी जैन जयपुर,

6.मुम्बई (दादर) : पं. संजयकुमारजी जैन नागपुर **7.औरंगाबाद :** पं. ललितकुमारजी शास्त्री बण्डा **8.अकलूज :** पं. धन्यकुमारजी भोरे कारंजा, **9.नागपुर :** पं. देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, **10.मुम्बई :** पं.अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल **11.सोलापुर :** विदुषी पुष्पाबेन खण्डवा, **12.नातेपुते :** विदुषी आशाजी जैन मलकापुर, **13.खामगांव :** विदुषी स्नेहलताजी उदापुरकर अकोला, **14.कारंजा (लाड) :** पं. गुलाबचन्दजी जैन बीना, **15.वर्धा :** पं. फूलचन्दजी मुक्किरवार हिंगोली, **16.गजपंथ (सिद्धक्षेत्र) :** पं. राजूभाई जैन कानपुर, **17.वसमतनगर :** पं. केशवरावजी जैन नागपुर, **18.हिंगोली :** पं.अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़ **19.देऊलगांवराजा :** विदुषी सुधाबेन छिन्दवाड़ा, **20.अहमदनगर** : पं.दिलीपकुमारजी महाजन मालेगाँव, **21.मलकापुर :** पं.नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, **22.पुसद :** पं.संजयजी महाजन वाशिम, **23.अक्कलकोट :** पं.विजयकुमारजी राऊत रिठद, **24.मालशिरस** : पं.अनिलकुमारजी बेलोकर सुलतानपुर, **25. शिरडशहापुर :** पं.प्रशांतकुमारजी काले, **26.मालेगांव :** पं.आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा, **27.कुम्भोज बाहुबली :** पं.नेमीनाथजी बालिकाई, **28.पुणे (स्वाध्याय भवन) :** पं मांगीलालजी उदयपुर **29.वसमतनगर :** पं.नेमीचन्दजी महाजन, **30.मुम्बई (अणुशक्तिनगर) :** पं.सुमेरचंदजी बेलोकर, **31.मुम्बई (दहीसर) :** विदुषी शुद्धात्मप्रभाजी टडैया, **32.मुम्बई :** श्रीमती स्वानुभूति जैन **33.मुम्बई (भायन्दर ईस्ट) :** विदुषी राजकुमारी जैन **34.मुम्बई(एवरशाइननगर):** पं.ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट, **35.मुम्बई :** पं.अनिलजी शास्त्री मुम्बई, **36.मुम्बई :** पं. फूलचन्दजी शास्त्री, उमराला **37.वाशिम(जवाहरकॉलोनी) :** पं.रवीन्द्रजी काले कारंजा, **38.पिंपरीराजा :** पं.अश्विनकुमारजी नानावटी, **39.ढासाला :** पं.वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री बरां, **40.सदाशिवनगर :** पं.अनिलजी आलमान, **41.फालेगांव :** पं.दीपककुमारजी अथणे, **42.पानकन्हेरगाँव :** पं. अशोकजी मिरकुटे **43.औरंगाबाद :** पं. कल्याणमलजी गंगवाल **44.नागपुर :** पं.मधुकरजी गडेकर, **45.वसमतनगर :** पं.नेमिचन्दजी महाजन, **46.एलोरा:** पं. गुलाबचन्दजी बोरालकर **47.एलोरा :** पं.प्रदीपजी माद्रप, **48. जिंतूर :** पं.नरेन्द्रजी वानरे, **49.वर्धा :** पं.राजेन्द्रजी भागवत्कर, **50.रामटेक :** पं.गेंदालालजी जैन, **51.सेलू :** पं. अशोकजी वानरे, **52. हिंगोली :** पं. पद्माकरजी दोडल **53.हिंगोली :** पं. जयकुमारजी दोडल **54.सांगली :** पं.महावीरजी पाटील, **55. लोणावला :** पं.गोकुलचन्दजी जैन, **56.देऊलगांवराजा :** पं. विजयकुमारजी आह्वाने, **57.देऊलगांवराजा :** पं.उमाकांतजी बंड, **58.चिखली :** पं.देवलालजी जैन, **59.जयसिंहपुर :** पं.पार्श्वनाथजी कुगे, **60.कन्नड :** पं.सचिनजी पाटनी, **61.हिंगोली (सैतवाल मंदिर):** पं.अमोलजी संघई, **62. कारंजा (लाड):** पं. आलोकजी शास्त्री **63. नवागढ़ :** पं. संतोषजी उखलकर **64. सोलापुर (बुवने मंदिर):** पं.विजयजी कालेगोरे, **65. सोलापुर :** पं.किरणजी पाटील।

गुजरात प्रान्त ह्न 1.अहमदाबाद (नवरंगपुरा) : पं. शैलेषभाई शहा तलोद, **2.अहमदाबाद (पालडी) :** पं. सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट, **3.अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पं. स्वानुभवजी शास्त्री **4.अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पं.देवीलालजी जैन उदयपुर, **5.अहमदाबाद (अमराईवाडी) :** पं.संजयकुमारजी बड़ामलहरा **6.अहमदाबाद (बापूनगर) :** पं. महावीरजी जैन उदयपुर **7.अहमदाबाद(ओढ़व) :** पं. राकेशकुमारजी शास्त्री लिधौरा, **8.अहमदाबाद (न्यू जैन मिलन) :** पं.अनिलकुमारजी इन्जि. भोपाल, **9.अहमदाबाद(नारायणनगर) :** पं. अभिषेकजी सिलवानी **10.बडोदरा :** पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री ललितपुर, **11.तलोद :** पं.महेन्द्रकुमारजी शास्त्री भिण्ड, **12.दाहोद :** पं. रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **13.रखियाल :** पं. रमेशजी मंगल सोनगढ़, **14.हिम्मतनगर :** पं. मेहुलकुमारजी मेहता कोलकाता, **15.राजकोट :** पं. वृजलालजी अजमेरा राजकोट, **16. मोरबी :** पं. प्रवेशकुमारजी भारिल्ल करेली, **17. वापी :** पं. प्रशांतजी मोहरे **18.पोरबन्दर :** पं. विशालजी कान्हेड **19. जेतपुर** : पं. नयनकुमारजी शहा, हैद्राबाद **20. अहमदाबाद :** पं.दीपचन्दजी जैन, **21.अहमदाबाद :** पं.नवीनजी जैन, **22.अहमदाबद :** पं. रीतेशजी शास्त्री, **23.मोरबी :** पं.इंदुभाईजी सिंघई, **24. गोंडल :** पं. अरविन्दजी जैन, **25. सूरत :** पं. संतोषजी बोगार सोलापुर, **26. सूरत :** पं. धर्मेन्द्रजी बड़ामलहरा, **27. सरसपुर (अहमदाबाद) :** पं. अनुजजी जैन जयपुर, **28. मांजलपुर (बड़ोदरा) :** पं. शाकुलजी शास्त्री मेरठ।

उत्तरप्रदेश प्रान्तह्न 1.बडौत : पं. अजितकुमारजी फिरोजाबाद, **2.ललितपुर :** पं. अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, **3. सहारनपुर :** पं. संजयकुमारजी जैन खनियांधाना, **4. मुजफ्फरनगर :** पं. प्रद्युम्नकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर **5. मेरठ :** पं. अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, **6. कानपुर (कारवालोनगर) :** पं. अरविन्दकुमारजी टीकमगढ़, **7. गाजियाबाद :** पं. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, **8. कुरावली :** पं. शुद्धात्मप्रकाशजी मौ **9.फिरोजाबाद (धर्मशाला) :** पं. गोकुलचन्दजी सरोज ललितपुर, **10. मड़ावरा :** पं. रमेशचन्दजी जैन करहल, **11.शेरकोट :** पं. प्रदीपकुमारजी धामपुर, **12. यमुनानगर :** पं.संतोषकुमारजी साहू **13. रामपुर मणिहारन :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी वीर फिरोजाबाद, **14. आगरा (ताजगंज) :** पं. राजेन्द्रकुमारजी शास्त्री खड़ैरी, **15. मैनपुरी** : पं. प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर, **16. धामपुर :** पं. राहुलजी शास्त्री बिनौता, **17.बानपुर :** पं. जितेन्द्रकुमारजी सिंगोड़ी **18. गंगेरू :** पं. जितेन्द्रकुमारजी शास्त्री खड़ैरी, **19.अफजलगढ़ :** पं. नयनेशकुमारजी शास्त्री, ओबरी **20. जसवन्तनगर** : पं. पवनकुमारजी शास्त्री मौ, **21. आगरा (नमकमण्डी) :** पं.सुदीपकुमारजी शास्त्री बरगी, **22. कासगंज :** पं. आशीषजी शास्त्री जबेरा, **23. खतौली** : पं. कल्पेन्द्रकुमारजी **24. वसुन्धरा (गाजियाबाद) :** पं. निखिल बण्डा **25.बाह :** पं. नवीनकुमारजी शास्त्री बरां **26. एत्मादपुर** : पं. राहुलजी शास्त्री बदरवास, **27. डांडा–इटावा :** पं.आशीषजी शास्त्री कोटा, **28.जेतपुरकलां :** पं. सौरभजी शास्त्री गढ़ाकोटा, **29.ललितपुर :** पं.भानुकुमारजी शास्त्री, **30.खतौली :** पं.सोनूजी शास्त्री, **31.सुलतानपुर :** पं. देवचन्दजी जैन, **32.अलीगढ़ :** पं. संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा **33.अलीगढ़ :** पं. सुधीरजी शास्त्री जबलपुर।

राजस्थान ह्न 1.कोटा (रामपुरा) : पं. वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, **2.कोटा (इंद्रविहार) :** पं. अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, **3.उदयपुर (भामाशाह मंदिर) :** पं.प्रकाशदादा झांझरी उज्जैन, **4.बाँसवाडा :** पं.राजकुमारजी जैन बाँसवाडा, **6.पिडावा :** पं.कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, **7.अलीगढ :** पं.पदमचंदजी जैन, **8.कुआँ :** पं.लक्ष्मीचंदजी जैन डूगरपुर, **9.किशनगढ :** पं.पवनकुमारजी जैन, **10.उदयपुर (केशवनगर) :** पं.श्रेयांसकुमारजी शास्त्री जबलपुर, **11.भीलवाडा :** पं.अनिलकुमारजी पाटौदी बडनगर, **12.डबोक :** पं.मीठालालजी जैन कलिंजरा, **13.कुशलगढ :** पं.भोगीलालजी जैन उदयपुर, **14.टोकर :** पं.वीरेन्द्रकुमारजी जैन डडूका, **15.बारां :** पं.भगवतीप्रसादजी जैन बारां, **16.भींडर :** पं.रितेशकुमारजी शास्त्री डडूका, **17.निम्बाहेडा :** पं. सुनीलकुमारजी नाके, **18.उदयपुर (सेक्टर 11) :** पं.गौरवकुमारजी शास्त्री इंदौर, **19.बेगूं :** पं.चंदूलालजी जैन कुशलगढ़, **20.बीकानेर :** पं. अरविंदकुमारजी सुजानगढ, **21.चित्तौडगढ :** पं.सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, **22.उदयपुर (सन्मति भवन) :** पं.सुरेशचंदजी सिंघई भोपाल, **23.उदयपुर (चंद्रप्रभ मंदिर) :** पं.अंचलप्रकाशजी जैन ललितपुर, **24.बिजौलिया :** पं.जयकुमारजी जैन बारां, **25.झालरापाटन :** पं.विक्रांतकुमारजी पाटनी झालरापाटन, **26.बेरी :** पं.माणिकचंदजी जैन बेरी, **27.अजमेर :** पं. संदीपजी

(शेष पृष्ठ–8 पर ...)

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 12

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

इस गाथा में आचार्य सर्वज्ञता को और विशेष स्पष्ट करते हैं –

उप्पज्जदि जदि णाणं कमसो अट्ठे पडुच्च णाणिस्स।
तं णेव हवदि णिच्चं ण खाइगं णेव सव्वगदं।।५०।।

(हरिगीत)

पदार्थ का अवलम्ब ले जो ज्ञान क्रमशः जानता।
वह सर्वगत अर नित्य क्षायिक कभी हो सकता नहीं।।

यदि ज्ञानी का ज्ञान क्रमशः पदार्थों का अवलम्बन कर उत्पन्न होता है, तो वह ज्ञान नित्य, क्षायिक एवं सर्वगत नहीं हो सकता।

आप लाईन में खड़े रहो, जब नम्बर आएगा, तब मैं टिकिट दूँगा। ऐसे ही ज्ञान यदि यह कहने लग जाय कि अभी मैं इनको जान रहा हूँ, बाद में आपका नम्बर आएगा, तब आपको जान लूँगा। इसप्रकार यदि ज्ञान क्रम से जानने लग जाए तो वह ज्ञान सर्वगत, क्षायिक और नित्य कैसे हो सकता है ? केवलज्ञान सर्वगत है अर्थात् वह लोकालोक को जानता है, क्षायिक है, नित्य है अर्थात् वह कभी नष्ट नहीं होगा।

यदि सर्वज्ञ क्रम से जानने लग जाएं तो उनके ज्ञान के लिए ये तीनों विशेषण प्रयुक्त नहीं किये जा सकते। केवलज्ञान सर्वगत है, क्षायिक है, नित्य है ह्न यह मानकर भी यदि कोई यह ऐसा मान रहा है कि केवलज्ञान क्रम से जानता है तो वह इन विशेषणों का अर्थ ही नहीं समझता। **पदार्थों को क्रम से जानने पर जगत के अनंत पदार्थों को जानने में अनंतकाल बीत जाएगा, तब भी जानना सम्भव नहीं होगा। यदि सबको जानना है तो एक समय में ही जानना चाहिए। यदि उसमें क्रम माना तो फिर जगत में कोई सर्वज्ञ हो ही नहीं सकता।**

इसे और अधिक स्पष्ट करने के लिए यह गाथा महत्त्वपूर्ण है ह्न

तिक्कालणिच्चविसमं, सयलं सव्वत्थसंभवं चित्तं।
जुगवं जाणदि जोण्हं, अहो हि णाणस्स माहप्पं।।५१।।

(हरिगीत)

सर्वज्ञ जिन के ज्ञान का माहात्म्य तीनों काल के।
जाने सदा सब अर्थ युगपद् विषम विविध प्रकार के।।

त्रिकालवर्ती, सदा विषम, सर्व क्षेत्र के विविध प्रकार के, सर्व पदार्थों को जिनदेव का ज्ञान एकसाथ जानता है। अहो ! यह ज्ञान का माहात्म्य है।

यदि ज्ञान पहले मध्यलोक को, फिर उर्ध्वलोक को और फिर अधोलोक को जानेगा तो कम से कम तीन समय तो लगेंगे ही। जबतक ज्ञान एक समय में ही संपूर्ण लोकालोक को जानता है ह्न ऐसी श्रद्धा नहीं होगी, तबतक सर्वज्ञता पर दृढ़ श्रद्धा नहीं होगी। इसी अर्थ को आचार्य इस गाथा के माध्यम से दृढ़ करते हैं ह्न

ण वि परिणमदि ण गेण्हदि उप्पज्जदि णेव तेसु अट्ठेसु।
जाणण्णवि ते आदा अबंधगो तेण पण्णत्तो।।

(हरिगीत)

सवार्थ जाने जीव पर उनरूप न परिणमित हो।
बस इसलिए है अबंधक ना ग्रहे ना उत्पन्न हो।।५२।।

(केवली भगवान) उन पदार्थों को जानते हुए भी उसरूप परिणमित नहीं होते, उन्हें ग्रहण नहीं करते तथा उनरूप से उत्पन्न नहीं होते; इसलिए अबंधक कहे गए हैं।

आत्मा पर-पदार्थों को जानते हुए न तो उन्हें परिणमित कराता है, न ही उनरूप परिणमित होता है और न उन्हें ग्रहण करता है, न उनरूप से उत्पन्न होता है; इसप्रकार परपदार्थों में कोई भी हस्तक्षेप किए बिना जानना होता है। ज्ञान का स्वभाव इसप्रकार से जानने का है।

एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य पर पड़नेवाले प्रभाव को समझाने के उद्देश्य से एक विद्वान ने यह उदाहरण दिया कि १० किलो हलुआ यदि ६०० आदमी देखते हुए निकल जाए तो हलुआ पावभर कम हो जाएगा। उन्होंने कभी प्रयोग करके देखा होगा, तब वह बात सच्ची निकल गई होगी; क्योंकि ताजा हलुआ यदि रखो तो उसमें पानी रहता है जो भाप बनकर उड़ जाता है। गर्म से ठण्डा होते-होते पावभर पानी कम होगा ही।

उनकी बात को काटते हुए दूसरे विद्वान ने कहा कि चक्षु तो अप्राप्यकारी है; अतः चक्षु ने उसे ग्रहण कर लिया ह्न यह संभव नहीं है। इस पर दोनों में वाद-विवाद आरंभ हो गया।

उस वाद-विवाद का समय भी तय हो गया कि सुबह दो घण्टे और दोपहर दो घण्टे ह्न यह वाद-विवाद चलेगा; एक अध्यक्ष बनेगा ह्न इसप्रकार सब तय हो गया। दोनों ही तरफ ५-७ दिन तक '**एवं चेत् एवं स्यात्**' चलता रहा, तर्क-युक्तियाँ और प्रमाण चलते रहे। अंततः प्रथम विद्वान कमजोर पड़ने लगे।

तब दूसरे विद्वान ने कहा कि ह्न 'आप न्यायाचार्य हैं। यदि आपके मुँह से वैसा गलत वाक्य निकल ही गया था तो आप उसके साथ एक वाक्य ऐसा भी जोड़ देते कि ह्न '**इति केचित्।**' अर्थात् ऐसा कुछ लोग कहते हैं '**तदप्यसत्।**' वह भी सत्य नहीं है। जो काम इतने से निपटता था; उसके लिए तुमने सात दिन लगा दिए।'

न्याय ग्रन्थों में जब पूर्वपक्ष रखा जाता है, तब '**इति केचित्**' ह्न ऐसा कुछ लोग कहते हैं ह्न ऐसा कहा जाता है। जब उनका खण्डन करना प्रारम्भ करते हैं, तब सबसे पहले '**तदप्यसत्**' यह सत्य नहीं है ह्न ऐसा कहा जाता है।

कहने का आशय यह है कि इतने दिग्गज न्यायशास्त्री निरर्थक विषयों पर वाद-विवाद तो करते रहे; लेकिन सर्वज्ञता के वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ रहे। हम उनसे पूछते हैं कि आप जिंदगीभर सर्वज्ञता पढ़ाते रहे और अब सर्वज्ञता पर दायें-बायें हो रहे हैं। आपने लोगों को करणानुयोग पढ़ाया और बताया कि ६ महिने ८ समय में ६०८ जीव मोक्ष जाएँगे। इसप्रकार सब निश्चित है। ह्न ऐसा आपने ही सबको बताया।

आशय यह है कि पढ़ानेवालों को भी यह समझ में क्यों नहीं आता कि करणानुयोग में हरतरह के जीवों की निश्चित संख्या लिखी हुई है। यह संख्या त्रिकाल की है। ऐसा नहीं है कि यह संख्या आज की जनगणना के अनुसार हो और १० साल बाद की जनगणना में संख्या बढ़ जाएगी। यह संख्या हमेशा इतनी ही रहेगी, तब क्या यह सब यह घोषित नहीं करता है

कि सब निश्चित है और इसे केवली के अलावा और कौन जान सकता है ? इसप्रकार यह बात सर्वज्ञता व क्रमबद्ध को भी सिद्ध करती है।

समयसार में क्रमबद्धपर्याय संबंधी एक पंक्ति मिलती है; जो इसप्रकार है ह्न

जीवो हि तावत् क्रमनियमितात्परिणामैरुत्पद्यमानो जीव एव नाजीवः।

इसमें तो यह साफ-साफ लिखा है कि जीव; अजीव नहीं है, जीव ही है। यह भेदविज्ञान की गाथा है और जीव का स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिख दिया कि जीव अपने क्रमनियमित परिणामों से उत्पन्न होता हुआ जीव ही है। यहाँ '**क्रमनियमित आत्मपरिणामों से उत्पन्न होता हुआ।**' इतना ही वाक्य क्रमबद्धपर्याय को सिद्ध करता है। क्रमबद्धपर्याय की सिद्धि करणानुयोग से होती है और सर्वज्ञसिद्धि न्यायशास्त्रों से सिद्ध होती है अथवा प्रवचनसार के इस ज्ञानाधिकार से सिद्ध होती है।

इस ज्ञानाधिकार का समापन करते हुए आचार्य अमृतचन्द्र ने एक कलश लिखा है; जो बहुत ही मार्मिक है एवं संपूर्ण ज्ञानाधिकार को अपने में समेटनेवाला है ह्न

(स्रग्धरा)

जानन्नप्येष विश्वं युगपदपि भवद्भाविभूतं समस्तं।
मोहाभावाद्यदात्मा परिणमति परं नैव निर्लूनकर्मा।।
तेनास्ते मुक्त एव प्रसभविकसितज्ञप्तिविस्तारपातं।
ज्ञेयाकारं त्रिलोकीं पृथगपृथगथ द्योतयन् ज्ञानमूर्तिः।।४।।

(मनहरण कवित्त)

जिसने किये हैं निर्मूल घातिकर्म सब।
अनंत सुख वीर्य दर्श ज्ञान धारी आतमा।।
भूत भावी वर्तमान पर्याय युक्त सब।
द्रव्य जाने एक ही समय में शुद्धात्मा।।
मोह का अभाव पररूप परिणमें नहीं।
सभी ज्ञेय पीके बैठा ज्ञानमूर्ति आतमा।।
पृथक्-पृथक् सब जानते हुए भी ये।
सदा मुक्त रहें अरिहंत परमातमा।।४।।

जिसने कर्मों का नाश किया है - ऐसा आत्मा भूत, भावी और वर्तमान संपूर्ण विश्व को युगपत जानता है; तथापि मोह का अभाव होने के कारण पररूप से अर्थात् ज्ञेयरूप से परिणमित नहीं होता है। उसके कारण वह ज्ञानमूर्ति आत्मा वेग से विकास को प्राप्त ज्ञप्तिविस्तार से उनके संपूर्ण ज्ञेयाकार को पी गया है ह्न ऐसे तीनलोक के पदार्थ समूह को पृथक् और अपृथक् प्रकाशित करते हुए मुक्त रहता है।

यह स्रग्धरा छन्द है। स्रग् अर्थात् माला और धरा अर्थात् धारण करनेवाली। हाथ में माला लेकर चलनेवाली मालिन जैसे मटक-मटक कर चलती है; वैसे ही यह स्रग्धरा छन्द चलता है।

भूत, भावि और भवत् अर्थात् वर्तमान ह्न इसप्रकार इसमें तीनों काल की पर्यायें समा गई हैं। विश्व अर्थात् छह द्रव्यों का समूह। **सर्वज्ञता छहद्रव्यों की भूतकालीन, वर्तमानकालीन व भविष्यकालीन सभी पर्यायों को युगपद् अर्थात् एक साथ जानती है। जितने द्रव्य हैं, उन सबकी सब पर्यायों को भी सर्वज्ञ का ज्ञान जानता है।**

हम जितने लोगों को जानते-पहिचानते हैं, उतने लोगों से मोह बढ़ जाता है, झगड़ा अथवा दोस्ती हो जाती है। इसका अर्थ यह हो गया कि जो जितना अधिक जानते हैं, उनके उतने अधिक शत्रु व मित्र होंगे। जिसका जितना परिचय का क्षेत्र होता है, उस परिचय के क्षेत्र में ही उसके शत्रु व मित्र होते हैं; परंतु यह आत्मा मोहनीय कर्म के अभाव के कारण एवं घातिया कर्मों को जिसने नष्ट कर दिया है ह्न ऐसा होने के कारण वह मोह के अभावरूप से ऐसा परिणमित हुआ है कि वह संपूर्ण लोकालोक में जितने भी पदार्थ है एवं उनकी पर्यायें हैं; उनको पृथक एवं अपृथकरूप से जानता है; पर किसी में भी एकत्व नहीं करता और किसी से भी राग-द्वेष नहीं करता।

सर्वज्ञ भगवान दो द्रव्यों में विद्यमान पृथकता को भी जानते हैं और एक द्रव्य में जो अनेक गुण हैं, उनमें विद्यमान पृथकता और अपृथकता को भी जानते हैं; साथ में पृथकता और अपृथकता की अपेक्षाओं को भी जानते हैं।

यह भी बहुत मार्मिक प्रकरण है। यहाँ कई लोग कहते हैं कि भेद तो व्यवहार है, इसलिए भेद तो है ही नहीं।

अरे भाई ! भेद व्यवहार नहीं है, भेद को जानना व्यवहार है। भेद के लक्ष्य से आत्मा की सिद्धि नहीं होती है। इसलिए भेद को जानना व्यवहार है ह्न ऐसा कहा है। भेद तो वस्तु के स्वरूप में ही पड़ा है।

दो द्रव्य अलग-अलग हैं। एक द्रव्य के दो गुण सर्वथा अलग-अलग नहीं हैं तथा एक द्रव्य की दो पर्यायें भी सर्वथा पृथक्-पृथक् नहीं हैं। एक द्रव्य के गुणों और पर्यायों में कथंचित् भेद और कथंचित् अभेद है; परन्तु भेद के जानने पर विकल्प की उत्पत्ति होती है। इसलिए अनुभव के काल में भेद का निषेध है। सर्वज्ञ भगवान तो भेद और अभेद दोनों को ही एकसाथ जानते हैं।

जिसने कर्मों को छेद डाला है ह्न ऐसा यह आत्मा भूत, भविष्यत और वर्तमान समस्त विश्व को एक ही साथ जानता हुआ मोह के अभाव के कारण पररूप परिणमित नहीं होता; इसलिए कहा है कि जिसके समस्त ज्ञेयाकारों को अत्यंत विकसित ज्ञप्ति के विस्तार से स्वयं पी गया है ह्न ऐसे तीनों लोक के पदार्थों को पृथक् और अपृथक् प्रकाशित करता हुआ वह ज्ञानमूर्ति मुक्त ही रहता है।

निश्चयनय अभेद को जानता है, व्यवहारनय भेद को जानता है और केवलज्ञान प्रमाणज्ञान है; अतः दोनों को जानता है। केवलज्ञान समस्त द्रव्यों के समस्त विस्तार को जानते हुए अत्यंत विकसित है अर्थात् उसने उन्हें आत्मसात कर लिया है। अर्थात् उनके ज्ञान में सब झलक रहा है। वह उन्हें पी गया है अर्थात् अपने अन्दर में ही तृप्त है। कोई भी वस्तु उसके ज्ञान के बाहर नहीं है। सहजज्ञान में ज्ञात हैं, उसी ज्ञान के वे ज्ञाता है अर्थात् ज्ञान क्रिया के ही वे कर्त्ता हैं ह्न ऐसा कहा जाता है।

कर्त्ता तो हैं, पर प्रयत्नपूर्वक करते हैं ह्न ऐसा कुछ नहीं है।

इसप्रकार यहाँ केवलज्ञान की महिमा बताकर ज्ञानाधिकार का समापन किया है।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

शास्त्री डडूका, 28.**नौगाँव :** पं.नागेशकुमारजी जैन पिडावा, 29.**नौगाँव :** पं.दीपकजी धवल भोपाल, 30.**अलवर :** पं.प्रेमचंदजी जैन अलवर, 31.**प्रतापगढ :** पं.कन्हैयालालजी टोकर, 32.**अलवर :** पं.मानमलजी जैन कोटा, 33.**साकरोदा :** पं.शाकुलजी जैन मेरठ, 34.**अजमेर :** पं.चंद्रप्रभातजी जैन बडामलहरा, 35.**पीसागन :** पं.मीठालालजी भगनोत, 36.**लकडवास :** पं.अमितजी जैन लुकवासा, 37.**किशनगढ :** पं.भँवरलालजी कोटा, 38.**कुरावड :** पं.चैतन्यजी कोटा, 39.**कानौड :** पं.शोभालालजी जैन, 40.**बूंदी :** पं.देवेन्द्रजी अकाझिरी, 41.**कूण :** पं.निखिलजी जैन कोतमा, 42.**वैर :** पं.एलमचंदजी जैन, 43.**लांबाखोह :** पं.राहुलजी जैन अलवर, 44.**लूणदा :** पं. विकासजी जैन बानपुर, 45.**पीसागन :** पं.निखिलजी शास्त्री कोतमा, 46.**विजयनगर :** पं.शकुनराजजी लोढ़ा, 47.**प्रतापगढ़ :** पं.सज्जनलालजी सांवरिया, 48.**रूपाहेडीकलां :** पं.पद्माकरजी मंजूले, 49.**बस्सी :** पं.कृष्णचन्दजी शास्त्री भिण्ड, 50.**प्रतापगढ़ :** पं.सुनीलजी शास्त्री, 51.**बांरा :** पं.संजीवजी शास्त्री, 52.**उदयपुर :** पं.कन्हैयालालजी शास्त्री, 53.**टामटिया :** पं. प्रमोदजी जैन, 54. **भैसरोडगढ़ :** पं. संजयजी शास्त्री 55.**नौगामा :** पं.शीतलजी शास्त्री, 56.**कुचामनसिटी :** पं.जयप्रकाशजी गाँधी।

दिल्ली प्रान्त - 1. पं. राजमलजी जैन, भोपाल 2. पं. सिद्धार्थजी दोशी, रतलाम 3. पं. किशोरकुमारजी शास्त्री, बैंगलोर 4. पं. राजेशजी शास्त्री, सिंगोली 5. पं. मुकेशजी शास्त्री, सिंगोली 6. पं. पंकजजी शास्त्री, बण्डा 7. पं. मिश्रीलालजी जैन, खनियाधांना 8. पं.कनकलताजी जैन, खनियाधांना 9. विवेकजी जैन, सिवनी 10. पं.अशोकजी मांगूलकर, राघौगढ़ 11. पं.कस्तुरचन्दजी बजाज, भोपाल 12. पं. कस्तुरचन्दजी जैन, भोपाल 13. अविरलजी शास्त्री, विदिशा 14. पं. संदीपजी शास्त्री, गोहद 15. पं. पुरनचन्दजी जैन, मौ 16. पं. अरूणकुमारजी मोदी, सागर 17. पं. जयप्रकाशजी शास्त्री, साहिबाबाद 18. पं. अशोकजी जैन, दिलशाद गार्डन 19. सत्येन्द्रमोहनजी जैन, पडपडगंज 20. पं. नितिनजी जैन, नांगलराया 21. पं.अमितजी जैन, फूँटेरा 22. पं.सुनीलजी जैन, भोपाल 23. पं.दिनेशजी कासलीवाल, उज्जैन 24. पं.विकासजी कंधारकर 25. पं.अनिलजी धवल, कानपुर 26. पं.प्रकाशदादा, मैनपुरी 27. पं शांतीलालजी सोगानी, महिदपुर 28. पं.धनसिंहजी ज्ञायक, पिड़ावा 29. पं.अभिषेकजी शास्त्री, रहली 30. पं.चैतन्यजी सातपुते, गजपंथ 31. हितेशजी शास्त्री, चिचोली 32. पं. सुबोधकुमारजी शास्त्री, शाहगढ़ 33. पं.सौरभजी शास्त्री, शाहगढ़ 34. पं.सुरेन्द्रजी शास्त्री, शाहगढ़ 35. चिन्मयकुमारजी शास्त्री, पिड़ावा 36. पं.गणतंत्रकुमारजी शास्त्री, खरगापुर 37. पं.माधवप्रसादजी शास्त्री, शाहगढ़ 38. पं.मनीषजी शास्त्री, पिड़ावा 39. पं.पुलकितजी शास्त्री, कोटा 40. पं.सुशीलजी शास्त्री, फूँटेरा 41. पं.मनोजजी शास्त्री, खड़ैरी 42. पं.राकेशजी शास्त्री 43. पं. भानुकुमारजी शास्त्री खड़ैरी, 44. पं.मनीषकुमारजी शास्त्री 'सिद्धान्त' 45. पं.राकेशजी शास्त्री, लोनी 46. पं. वीरागजी शास्त्री, जबलपुर 47.पं. हेमंतजी शास्त्री, आँवा 48.पं. प्रभातजी शास्त्री, टीकमगढ 49.पं.अनेकान्तजी शास्त्री 50.पं. संजयजी शास्त्री, बड़ामलहरा 51. पं. सुरेशजी शास्त्री 52.पं.राजेन्द्रजी टीकमगढ।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

07 से 09 सितम्बर	कोबा-अहमदाबाद	आध्यात्मिक शिविर
11 से 17 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
18 से 29 सितम्बर	कोल्हापुर	दिगम्बर पर्यूषण
17 से 26 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण-शिविर

अन्य प्रान्त - 1.**कोलकाता(पद्दोपुकुर) :** पं.राकेशकुमारजी शास्त्री, अलीगढ़ 2.**कोलकाता (नया मन्दिर) :** विदुषी समताजी झांझरी, उज्जैन 3.**कोलकाता (खडगपुर) :** पं.सुरेन्द्रकुमारजी, उज्जैन 4.**कोलकाता(नया मन्दिर) :** पं.अभिनयजी शास्त्री, जबलपुर 5.**कोलकाता(बाली) :** पं.चिन्मयकुमारजी शास्त्री, गुढ़ाचन्दजी 6.**बैंगलोर :** पं.अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड 7.**सरिया :** विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी, उज्जैन 8.**सरिया :** विदुषी पुष्पाजी झांझरी, उज्जैन 9.**गण्णौरमण्डी :** पं.महेशकुमारजी, भोपाल 10.**रामगढ़ (हजारीबाग) :** पं.रतनचन्दजी चौधरी, कोटा 11. **हिसार :** पं.कैलाशचन्दजी शास्त्री, मोमासर 12. **सरधना :** पं.हुकमचन्दजी सिंघई, राघौगढ़ 13.**हजारीबाग :** पं. वीरचन्दजी जैन 14. **बेलगाँव :** पं.योगेशजी शास्त्री, बरा 15. **नवलूर :** पं. बाहूबलीजी भोसगे 16. **कोयम्बटूर :** पं. जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री, उदयपुर 17. **एर्नाकुलम (कोचीन) :** पं. महावीरजी मांगूलकर, कारंजा 18. **एर्नाकुलम (कोचीन) :** पं. अजीतकुमारजी शास्त्री, मौ 19.**एर्नाकुलम (कोचीन) :** पं. संदीपकुमारजी शास्त्री, बिनौता 20. **एर्नाकुलम (कोचीन)** : दीपककुमारजी डांगे, आजेगाँव 21. **ऋषिकेश :** पं.निकलंकजी शास्त्री, कोटा 22. **सिकन्दराबाद** : पं. वरूणकुमारजी शाह 23. **पुरुलिया :** पं.मनीषकुमारजी शास्त्री, नकुड़ 24. **इण्डी :** पं. राजेन्द्रकुमारजी पाटील, एलिमुन्नोली, 25. **मीठापुर :** पं. दिनेशजी शास्त्री, बड़ामलहरा, 26. **श्रवणबेलगोला :** पं. शान्तिसागरजी शास्त्री ।

छपते-छपते

उज्जैन निवासी स्व. श्री फूलचन्दजी झांझरी के सुपुत्र ज्ञानभानुजी झांझरी का दिनांक १७ अगस्त, २००४ को प्रात: दुर्घटनाग्रस्त होने से इन्दौर अस्पताल में दिनांक २० अगस्त, २००४ को समताभावपूर्वक देहावसान हो गया है।

आप पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी के छोटे भाई तथा पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी के बड़े भाई थे। अपका सम्पूर्ण जीवन सामाजिक संगठनों एवं संस्थाओं के लिये समर्पित था। आपके चिरवियोग से जैनसमाज ने एक कुशल कार्यकर्त्ता खो दिया है; जिसकी पूर्ति होना संभव नहीं है।

आपके निधन पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान परिवार हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करते हुये भावना भाते हैं कि दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो। **- प्रबन्ध सम्पादक**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) सितम्बर (प्रथम) 2004
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127